इमामत का बयान

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

☞ इमाम और मोअज्जिन की ज़िम्मेदारी.

ईमाम के ज़ामीन होने का मतलब ये हे कि वो लोगो की नमाज़ का ज़ीम्मेदार हे अगर वो नेक व सालेह ना हो तो सब की नमाज़ खराब कर देगा इसलिये रसूलुल्लाहﷺ दुवा फरमाते हे ए अल्लाह इमामो को नेक व सालेह बना और मुअज़्ज़ीन के अमानतदार होने के ये माना हे कि लोगो ने अपनी नमाज़ के मामले को इसके हवाले कर दिया हे इसका फर्ज़ ये हे वक्त पर अज़ान दे, ताकी अज़ान सुन कर लोग ताय्यारी करे और इत्मीनान से जमात में शरीक हो सके अगर वक्त पर अज़ान मुमकीन ना हो तो बहुत से लोग जमात से मेहरूम रेह जाये या एक दो रकात छूट जाये, ये हदीस एक तरफ तो इमामो और मुअज़्ज़ीनो को ये हिदायत देती हे कि वो अपनी ज़ीम्मेदारी मेहसूस करे दुसरी तरफ उम्मत को

ये बताया जारहा हे कि इमामत के लिये नेक और परहेज़्गार आदमी को पसंद करे, और अज़ान के लिये ऐसे आदमी को मुकरर करे जिसके अन्दर ज़ीम्मेदारी का एहसास हो.

[अबू दाउद अन अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ नमाज़ियों का लिहाज़ करना.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कि जब तुम्मे से कोई इमामत करे तो [हालात का अदाजा कर के और नमाज़ियों का लिहाज करते हुवे] हल्की नमाज पढाये इसलिये कि तुम्हारे पीछे कमजोर भी होगे, बीमार और बूढे लोग भी. लेकिन जब तुम्मे से कोई अकेले अपनी नमाज पढे तो जितनी लम्बी नमाज पढनी चाहे पढे. [बुखारी, मुस्लीम; अन अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ नमाज़ियों का वकत व हालात का लिहाज़ करना.

हजरत अबू मसउद असारी (रदी) का बयान हे कि एक आदमी रसूलुल्लाहﷺ के पास आया, उसने कहा कि फुला इमाम फजर की नमाज लम्बी पढाता हे उस्की वजह से

सुबह की नमाज बा जमात मे देर से पहुचता हूँ [अबू मसउद फरमाते हे] मेने किसी वअज व तकरीर [भाषण] मे रसूलुल्लाहﷺ को इतना गुस्सा करते नही देखा जितना उस दिन की तकरीर मे देखा. आपने फरमाया, ऐ लोगो तुम्मे से कुछ इमामत करने वाले अल्लाह के बन्दो को अल्लाह की इबादत करने से बिदकाते हे [खबरदार] तुम्मे से जो भी इमामत करे *इख्तिसार से काम ले, क्योकि उस्के पीछे बूढे भी होगे, बच्चे भी, और काम काज पर निकलने वाले जरूरतमंद भी.

खुलासा- *इख्तिसार से काम लेने का मतलब ये नही कि उल्टी सीधी, जल्दी जल्दी नमाज पढ पढा दी जाये और चार रकअत नमाज डेढ मिनट मे पूरी कर दी जाये ऐसी नमाज इस्लाम की नमाज नही हे. हाँ नमाज़ियों का और वकत व हालात का जरूरी हद तक लिहाज किया जाना चाहिये.

[बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

☞ मुख्तसर किरात.

जाबिर (रदी) फरमाते हे कि मुआज बिन जबल (रदी) रसूलुल्लाहﷺ के साथ [मस्जिदे नबवी मे नफ्ल की निय्यत से] नमाज पढते, फिर जा कर अपनी कौम की इमामत करते, तो उन्हो ने एक रात इशा की नमाज रसूलुल्लाहﷺ के साथ पढी, और फिर जाकर इमामत की और सूरह बकरा शुरू की, तो एक आदमी ने सलाम फेर दिया और अलग अपनी नमाज पढ कर घर चला गया, दूसरे नमाज़ियों ने [नमाज पढने के बाद] उस्से कहा, तूने निफाक का काम किया उसने कहा नही मेने मुनाफिकाना काम नही किया. अल्लाह की कसम मे रसूलुल्लाहﷺ के पास जाऊँगा [और मुआज की लम्बी नमाज का किस्सा जिक्र करूँगा] चुनाचे उसने आकर कहा ऐ अल्लाह के रसूल! हम आबपाशी के उँट रखते हे [मजदूरी पर लोगो के बाग और खेतो की सिचाई का काम करते हे] दिन भर अपने काम मे लगे रहते हे, और मुआज का हाल ये हे कि इशा की नमाज आपﷺ के साथ पढ कर गये,

और सूरह बकरा शुरू कर दी [हम दिन भर के थके मादे कैसे इतनी देर तक खडे रह सके हे]? आप ये सुन पर मुआज की तरफ मुतवज्जेह हुवे और फिर फरमाया "ऐ मुआज! क्या तुम लोगो को फितना मे डालते हो? वश्शमसि व जुहाहा पढा करो, वल्ल्यली इजा यगशा पढा करो, सब्बिहिस्मा रब्बिकल आला पढा करो. अल्लाह हजरत मुआज (रदी) से राजी हो कि उन्के अमल से उम्मत के इमामो को कितनी बडी हिदायत मिली. [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]